(1) साहित्यिक स्रोत, (2) विदेशी यात्रियों का विवरण तथा (3) पुरातात्विक ...

प्रश्न- प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के (1) साहित्यिक स्रोत की विवेचना कीजिए।

(1) साहित्यिक स्रोत
(LITERARY SOURCES)

साहित्यिक स्रोतों के तहत विभिन्न साहित्यिक ग्रन्थों से प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है। साहित्यिक स्रोतों को भी दो भागों में बाँटा जा सकता है–

(क) धार्मिक साहित्य, (ख) लौकिक साहित्य या धर्मेतर साहित्य।

(क) धार्मिक साहित्य (Religious Literature)

धार्मिक साहित्य को पुनः चार वर्गों में बाँटा गया है–

(अ) ब्राह्मण साहित्य, (ब) बौद्ध साहित्य, (स) जैन साहित्य तथा (द) महाकाव्य।

(अ) ब्राह्मण साहित्य (Brahman Literature)

ब्राह्मण साहित्य के अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद, वेदांग, महाकाव्य, पुराण तथा स्मृति ग्रन्थ आते हैं।

वेद–वेद भारत के सर्वप्राचीन धर्मग्रन्थ हैं। वैदिककालीन संस्कृति के ज्ञान का एकमात्र स्रोत होने के कारण वेदों का ऐतिहासिक महत्व काफी अधिक है। वेदों की संख्या चार है–

(1) ऋग्वेद, (2) सामवेद, (3) यजुर्वेद तथा (4) अथर्ववेद।

पूर्व वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई. पू.) की जानकारी का एकमात्र स्रोत ऋग्वेद है।

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई. पू.) के इतिहास के अध्ययन के प्रमुख स्रोत यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रन्थ एवं उपनिषद् हैं।

ऋग्वेद–ऋग्वेद का अधिकांश भाग देव स्तुतियों से भरा हुआ है। इसके कुछ मन्त्र ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख करते हैं। ऋग्वेद काल की एक प्रमुख ऐतिहासिक घटना 'दस राजाओं के युद्ध' का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ–शाकल, वास्कल, आश्वलायन, शांखायन एवं मांडक्य हैं।

ऋग्वेद में 10 मण्डल एवं 1,028 सूक्त एवं विभिन्न ऋषियों द्वारा रचित कुल 10,580 ऋचायें हैं। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पुरुष सूक्त में प्रथम बार शूद्रों का उल्लेख किया गया है।

सामवेद—साम का शाब्दिक अर्थ है गान। इसमें मुख्यत: यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। इस भारतीय संगीत का मूल कहा जाता है।

यजुर्वेद—यजुर्वेद में यज्ञों के नियमों एवं विधि-विधानों का संकलन मिलता है। यह कर्मकाण्ड प्रधान है। इस ग्रन्थ से आर्यों के सामाजिक-धार्मिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है।

अथर्ववेद—ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अथर्ववेद का महत्व इसलिए अधिक है कि इसमें सामान्य मनुष्यों के विचारों तथा अन्ध-विश्वासों का वर्णन मिलता है। इसमें कुल 731 श्लोक एवं लगभग 6,000 पद्य हैं। इनमें विविध विषयों, जैसे—आयुर्वेद, चिकित्सा, भूत-प्रेत, जादू-टोना, समन्वय, राजभक्ति, विवाह तथा प्रणय गीतों आदि का विवरण मिलता है।

ब्राह्मण—सभी वेदों के अलग-अलग ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। कर्मकाण्डों के साथ-साथ इनमें सामाजिक विषयों का भी वर्णन है। प्रत्येक वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ निम्नवत् हैं—

(1) **ऋग्वेद**—एतरेय तथा कौषीतकी ब्राह्मण,

(2) **यजुर्वेद**—शतपथ, वाजसनेय तथा तैत्रीय ब्राह्मण,

(3) **सामवेद**—पंचविश तथा पाण्डय ब्राह्मण,

(4) **अथर्ववेद**—गोपथ ब्राह्मण।

उपर्युक्त ब्राह्मण ग्रन्थों से हमें परीक्षित के बाद एवं हर्यक वंश के बिम्बिसार के पूर्व की घटनाओं की ऐतिहासिक जानकारी मिलती है। ऐतिहासिक दृष्टि से शतपथ ब्राह्मण का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि इसमें गान्धार, शल्य कैकय, कुरू, पांचाल, कोसल एवं विदेह आदि के राजाओं का उल्लेख मिलता है।

अरण्यक—इनकी रचना अरण्यों अर्थात् वनों में पढ़ाये जाने के निमित्त होने के कारण इन्हें 'अरण्यक' कहा गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों के दार्शनिक पक्षों की निष्कार्षात्मक व्याख्या अरण्यकों में हुई है। ये इतने पवित्र माने जाते थे कि इनका पठन-पाठन अरण्य (वन) के अतिरिक्त कहीं भी निषेध था। इनमें ज्ञान एवं चिंतन को प्रधानता दी गई है। इन दार्शनिक रचनाओं से ही कालान्तर में उपनिषदों का विकास हुआ। शांखायन, तैत्तरीय, वृहदारण्यक, जैमिनी, मैत्रायणी तथा तल्वकार आदि प्रमुख अरण्यक ग्रन्थ हैं।

उपनिषद्—उपनिषद् का अर्थ है गोपनीय या ब्रह्म ज्ञान के सिद्धान्त। ये भारतीय दर्शन के मुख्य स्रोत माने जाते हैं। इन्हें अरण्यकों के पूरक के रूप में भी माना जाता है। इनमें मुख्यत: आत्मा, परमात्मा, सृष्टि की रचना तथा प्राकृतिक चमत्कारों का वर्णन मिलता है। इनकी संख्या 108 है जिनमें से कुछ प्रमुख निम्न है—ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, एतरेय, तैत्तरीय, छांदोग्य, बृहदारणक्य, श्वेताश्वतर, कौषीतकी उपनिषद् आदि।

कठोपनिषद् बुद्ध से भी प्राचीन माना जाता है। शेष उपनिषद् बुद्ध से अधिक प्राचीन नहीं माने जाते। छान्दोग्य उपनिषद् में उस काल में पढ़ाये जाने वाले विषयों की सूची मिलती है, इसी उपनिषद् में सर्वप्रथम कृष्ण एवं प्रथम तीन आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ) का उल्लेख मिलता है। उपर्युक्त तीनों आश्रमों सहित चौथे आश्रम संन्यास का उल्लेख जावालिपनिषद् में मिलता है। 'सत्य मेव जयते' वाक्य मुण्डकोपनिषद् में मिलता है। इस प्रकार उपनिषद् प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने के प्रमुख स्रोत हैं।

वेदांग—वेदों का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए वेदों का अर्थ ठीक से समझने के लिए वैदिक काल के अन्त में वेदांगों की रचना हुई। इनकी संख्या छ: है।

(1) **शिक्षा**—वैदिक स्वरों की शुद्ध उच्चारण विधि।

(2) **कल्प**—ऐसे सूत्र जिनमें कर्मकाण्ड, धर्म व्यवस्था, यज्ञ संस्कार विधि आदि का वर्णन होता है, कल्पसूत्र कहलाते हैं। ये चार हैं—शुल्व सूत्र, स्रोत सूत्र, गृह सूत्र एवं धर्म सूत्र।

(3) **व्याकरण**—शब्दों की मीमांसा करने वाला शस्त्र व्याकरण कहा गया है, जिसका सम्बन्धी भाषा सम्बन्धी नियमों से है। व्याकरण की सर्वप्रमुख रचना **पाणिनी** कृत 'अष्टाध्यायी' (पाँचवीं सदी ई. पू.) है।

(4) **निरुक्त (भाषा विज्ञान)**—क्लिष्ट वैदिक शब्दों के संकलन 'निघण्टु' की व्याख्या हेतु **यास्क** ने 'निरुक्त' की रचना की जो भाषा शास्त्र का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है।

(5) **छन्द**—वैदिक मंत्र प्रायः छन्दबद्ध हैं। छन्दों के नाम संहिताओं व ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलते हैं। छन्दशास्त्र में **पिंगल मुनि** का ग्रन्थ 'छन्दशास्त्र' काफी महत्वपूर्ण है।

(6) **ज्योतिष**—शुभ मुहूर्त में याज्ञिक अनुष्ठान करने, ग्रहों एवं नक्षत्रों का अध्ययन कर सही समय ज्ञात करने की विधि से वेदांत ज्योतिष की उत्पत्ति हुई। ज्योतिष सम्बन्धी सर्वप्राचीन एवं सर्वप्रमुख कृति **लगध मुनि** कृत 'वेदांत ज्योतिष' है।

स्मृति साहित्य—ई. पूर्व द्वितीय शताब्दी से लेकर पूर्व मध्यकाल तक विभिन्न स्मृति ग्रन्थों की रचना हुई जो कि तात्कालिक इतिहास जानने के प्रमुख स्रोत हैं। कुछ प्रमुख स्मृति ग्रन्थ निम्नवत् हैं—

(1) मनु स्मृति (200 ई. पू. से 200 ई.),

(2) याज्ञवल्क्य स्मृति (100 ई. से 300 ई.),

(3) नारद स्मृति (300 ई. से 400 ई.),

(4) पाराशर स्मृति (300 ई. से 500 ई.),

(5) बृहस्पति स्मृति (300 ई. से 500 ई.),

(6) कात्यायन स्मृति (400 ई. से 600 ई.)।

उपर्युक्त में 'मनुस्मृति' (शुंग काल ई. पू. द्वितीय शती) सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रामाणिक है, शेष गुप्तकलीन हैं। कालान्तर में उक्त स्मृति ग्रन्थों पर विभिन्न विद्वानों द्वारा टीका भी लिखी गयी। इन स्मृति ग्रन्थों में विभिन्न वर्णों, राजाओं और पदाधिकारियों के नियम भी दिये गये हैं।

पुराण—पुराण का शाब्दिक अर्थ 'प्राचीन आख्यान' होता है। पाँचवीं शताब्दी ई. पू. में पुराण ग्रन्थ अस्तित्व में आ चुके थे। पुराणों के अन्तर्गत हम प्राचीन शासकों की वंशावलियाँ पाते हैं। इनके संकलनकर्त्ता महर्षि लोमहर्ष तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं। पुराण व सरल व्यावहारिक भाषा में लिखे गये जनता के ग्रन्थ हैं जिनमें प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, पशु-पक्षी, वनस्पति विज्ञान, आयुर्वेद इत्यादि का विस्तृत वर्णन मिलता है। पुराणों की संख्या 18 है, जिनमें कुछ निम्न हैं—मत्स्य, मार्कण्डेय, भविष्य भागवत, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त्त, ब्रह्म, बामन, बारह, विष्णु, वायु, अग्नि नारद, पद्म, लिंग, गरुड़, कूर्म, स्कन्ध पुराण आदि। विद्वानों के निष्कर्ष निकाला है कि पुराणों का जो आधुनिक रूप है वह गुप्त काल में सम्पादित हुआ है।

विष्णु पुराण—मौर्य वंश का इतिहास मिलता है।

मत्स्य पुराण—आन्ध्र वंश के इतिहास पर प्रकाश डालता है।

वायु पुराण—इसमें गुप्त साम्राज्य एवं चन्द्रगुप्त प्रथम का उल्लेख मिलता है।

(ब) बौद्ध साहित्य (Buddhist Literature)

गौतम बुद्ध की मृत्यु के बाद उनकी शिक्षाओं को विभिन्न बौद्ध संगतियों में संकलित कर तीन पिटकों में विभाजित किया गया।

(1) **विनय पिटक**—इसमें संघ सम्बन्धी नियमों, दैनिक आचार-विचार व विधि निषेधों का संग्रह है। बुद्ध के शिष्य उपालि ने इसका संकलन किया था।

(2) **सुत्त पिटक**—इसमें बौद्ध धर्म के सिद्धान्त तथा उपदेशों का संग्रह है। बुद्ध के शिष्य आनन्द ने उसका संकलन किया था।

(3) **अभिधम्म पिटक**—यह प्रश्नोत्तर रूप में है और इसमें बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धान्तों का संग्रह है।

त्रिपिटकों के अतिरिक्त अन्य बौद्ध साहित्य में प्रमुख निम्न हैं—

जातक—गौतम बुद्ध के पूर्व जन्म से सम्बन्धित 549 कथाएँ इसमें मिलती हैं—

दीपवंश एवं महावंश—इन ग्रन्थों में सिंहले या लंका के इतिहास पर प्रकाश डाला गया है।

मिलिन्दपन्हो—नागसेन कृत 'मिलिन्दपन्हो' में यूनानी राजा मिनान्डर तथा नागसेन का वाद-विवाद मिलता है।

आर्य मंजू श्री मूलकल्प—गुप्त सम्राटों का वर्णन है।

अंगुत्तर निकाय—इनमें सोलह महाजनपदों का उल्लेख मिलता है। उक्त सभी ग्रन्थ पालि भाषा में हैं। इनके अलावा संस्कृत में लिखित 'महावस्तु' तथा 'ललित विस्तार' में महात्मा बुद्ध के जीवन तथा दिव्यावदान में परिवर्ती मौर्य शासकों एवं शुंग राजा पुष्यमित्र शुंग का उल्लेख मिलता है।

(स) जैन साहित्य (Jain Literature)

जैन साहित्य को 'आगम' (सिद्धान्त) कहा जाता है जिसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण एवं 14 पूर्व आते हैं। जैन साहित्य प्राकृत भाषा में लिखा गया। जैन साहित्य का दृष्टिकोण भी बौद्ध साहित्य के समान ही धर्मपरक है। प्रमुख जैन ग्रन्थों में परिशिष्ट पर्व, भद्रबाहु चरित, आवश्यक सूत्र, आचारांग सूत्र, भगवती सूत्र, कलिका पुराण आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनसे अनेक ऐतिहासिक घटनाओं की सूचना मिलती है।

आदि पुराण—इस ग्रन्थ के रचयिता आचार्य जिनसेन हैं। इनमें प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव का जीवन चरित्र दिया गया है।

समय सार—इसके रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द हैं। इसमें जीव, कर्त्ता, कर्म, पुण्य, पाप बन्ध एवं मोक्ष आदि का वर्णन है।

हरिवंश पुराण—इसके रचयिता आचार्य जिनसेन हैं। इसमें वसुदेव एवं नेमिनाथ का वर्णन है।

पद्म पुराण—रविषेण आचार्य रचित यह जैन रामायण है।

पाण्डव पुराण—शुभ चन्द्र रचित यह जैन महाभारत है।

कल्पसूत्र—इसमें जैन धर्म का प्रारम्भिक इतिहास मिलता है जिसकी रचना भद्रबाहु ने की थी।

परिशिष्ट पर्व एवं भद्रबाहु चरित्र—इनमें चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन की प्रारम्भिक तथा उत्तरकालीन घटनाओं की सूचना मिलती है।

भगवती सूत्र—इसमें महावीर स्वामी के जीवन, कृत्यों तथा समकालीन लोगों के साथ उनके सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है।

(द) महाकाव्य (Mahakavya)

वैदिक साहित्य के पश्चात् भारतीय इतिहास जानने के धार्मिक स्रोतों में महाकाव्यों का समय आता है। भारतीय धार्मिक साहित्य में दो महाकाव्य हैं—

(1) रामायण, (2) महाभारत।

भारत के सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य में इन दोनों ही महाकाव्यों का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं आदरणीय स्थान है। इनसे हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों का सांगोपांग विवरण प्राप्त होता है। इन महाकाव्यों में जिन नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों का प्रतिपादन किया गया है। वे सार्वभौम मान्यता तो रखते ही हैं साथ ही उनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। मूलत: ग्रन्थों की रचना ई. पू. चौथी शताब्दी में मानी जाती है। इनका वर्तमान स्वरूप क्रमश: द्वितीय एवं चौथी शताब्दी के लगभग तैयार किया गया था।

(1) **रामायण**—रामायण भारतीयों का सर्वप्राचीन महाकाव्य है, इसकी रचना **महर्षि वाल्मीकि** द्वारा की गयी थी। महाभारत में वाल्मीकि के साथ-साथ रामायण की संक्षिप्त कथा भी मिलती है। इससे पता चलता है कि रामायण, महाभारत से प्राचीन है। रामायण के रचना काल में विद्वानों में मतभेद हैं। विन्टरनित्स महोदय ने अपनी कृति 'हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर' में रामायण का रचना काल ई. पू. चौथी शताब्दी माना है इसे अन्तिम स्वरूप दूसरी शताब्दी ई. पू. दिया गया। सम्प्रति इसमें 24,000 **श्लोक** हैं। अत: इसे **'चतुर्विंशति साहत्री संहिता'** कहा जाता है। अमेरिकी अन्तरिक्ष एजेन्सी नासा के साफ्टवेयर की गणनाओं के आधार पर रामायण के घटनाक्रम का काल 5100 ई. पू. बताया गया है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के डॉ. एल. एम. बहल का कहना है कि इन तिथियों का मिलान पुरातन श्लोकों से करने पर इनकी पुष्टि होती है। आई. आर. एस. के. डॉ. पुस्कर भटनागर ने भी इन तिथियों की पुष्टि की है। उसके बावजूद भी विद्वानों में रामायण की ऐतिहासिकता एवं इसके काल को लेकर मतभेद हैं।

(2) **महाभारत**—महाभारत की रचना **वेदव्यास** ने की थी। रामायण की तरह महाभारत का रचनाकाल भी ई. पू. चौथी शताब्दी में माना जाता है। इसका वर्तमान स्वरूप चौथी सदी ई. निर्धारित की गयी है। अधिकांश

विद्वानों ने महाभारत को एक ऐतिहासिक घटना माना है। महाभारत युद्ध का काल 1400 से 1000 ई. पू. के बीच निर्धारित किया गया है। महाभारत में **एक लाख श्लोकों** का संग्रह है, अत: इसे '**शत साहस्त्र संहिता**' कहा जाता है। महाभारत में शक, यवन, पारसीक, हूण आदि जातियों का उल्लेख मिलता है।

महाभारत के शांतिपर्व में लिखा है कि चारों वर्णों को वेद सुनना चाहिये। स्त्री को धर्म, अर्थ, काम का मूल बताया गया है। रामायण के जनक की भाँति महाभारत में युधिष्ठिर को हल चलाते हुये दिखाया गया है। इससे कृषि कार्य के महत्व का पता चलता है। युधिष्ठिर ने भी राजसूय यज्ञ किया था। इस प्रकार रामायण की तरह महाभारत में भी उस युग की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति की पूर्ण जानकारी मिलती है। दोनों ही महाकाव्य तत्युगीन इतिहास को जानने के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

(ख) लौकिक (धर्मेतर) साहित्य (Secular Literature)

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त धर्मेतर साहित्य भी प्राचीन भारतीय इतिहास पर समुचित प्रकाश डालता है। लौकिक साहित्य के अन्तर्गत ऐतिहासिक एवं अर्द्ध-ऐतिहासिक ग्रन्थों तथा जीवनियों को लिया जा सकता है जिनसे प्राचीन भारतीय को जानने में काफी मदद मिलती है।

ऐतिहासिक रचनाएँ

अर्थशास्त्र—ऐतिहासिक रचनाओं में सर्वप्रथम उल्लेख कौटिल्य (चाणक्य) कृत 'अर्थशास्त्र' का किया जा सकता है। मौर्यकालीन इतिहास एवं राजनीति के ज्ञान के लिए यह एक प्रमुख स्रोत है।

नीतिसार—कामन्दक रचित 'नीतिसार' में दसवीं शताब्दी के राजस्व सिद्धान्त तथा राजा के कर्तव्यों पर प्रकाश डाला गया है।

राजतरंगिणी—प्राचीन भारतीय इतिहास में शुद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ केवल कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' है। यह संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के क्रमबद्ध इतिहास लिखने का प्रथम प्रयास है। इसमें आदिकाल से लेकर 1151 ई. तक का कश्मीर का इतिहास मिलता है।

चचनामा—इसमें अरबों की सिन्ध विजय का वर्णन मिलता है।

इनके अलावा सोमेश्वर कृत 'रसमाला' तथा 'कीर्तिकौमुदी' मेरूतुंग कृत 'प्रबन्ध चिन्तामणि', राजशेखर कृत 'प्रबन्ध कोष' आदि में गुजरात के चौलुक्य वंश का इतिहास एवं संस्कृति का अच्छा वर्णन मिलता है।

अर्द्ध-ऐतिहासिक रचनाएँ

मुद्रा राक्षस—विशाखादत्त कृत नाटक 'मुद्रा राक्षस' में चाणक्य की कूटनीति द्वारा नन्द वंश की समाप्ति एवं चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यारोहण पर प्रकाश डाला गया है।

अष्टाध्यायी तथा वार्तिक—पाणिनी की 'अष्टाध्यायी' तथा कात्यायन के 'वार्तिक' आदि व्याकरण ग्रन्थों से मौर्यों के पूर्व के इतिहास तथा मौर्ययुगीन राजनीति अवस्था पर प्रकाश पड़ता है।

गार्गी संहिता—यह एक ज्योतिष ग्रन्थ है तथापि इससे भारत पर होने वाले यवन आक्रमण का उल्लेख मिलता है।

महाभाष्य—इसके रचयिता पातंजलि, पुष्यमित्र शुंग के पुरोहित थे, इस ग्रन्थ के शुंगों के इतिहास की जानकारी मिलती है।

मालविकाग्निमित्र—कालिदास कृत यह नाटक शुंगकालीन राजनीतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालता है।

ऐतिहासिक जीवनियाँ

अश्वघोष कृत 'बुद्ध चरित' गौतम बुद्ध के चरित्र पर प्रकाश डालता है।

वाणभट्ट कृत 'हर्ष चरित' हर्षवर्धन की उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है।

वाक्यपति के गौड़वाहो कन्नौज नरेश यशोवर्मन के गौड़ नरेश पर किये आक्रमण का विवरण प्राप्त होता है।

विल्हण का 'विक्रमांकदेव चरित्' कल्याणी के चालुक्य वंशी विक्रमादित्य षष्ठ विवरण प्रस्तुत करता है।

पद्यगुप्त का 'नवसाहसाङ्क चरित' धार नरेश मुंज तथा उसके भाई सिन्धुराज पर आधारित है।

सन्ध्याकर नन्दी कृत 'रामचरित' में 12वीं सदी में बंगाल के कैवर्त जाति के किसानों और पालवंशीय राजा रामपाल के संघर्ष का वर्णन प्रस्तुत करता है।

हेमचन्द्र कृत 'कुमारपाल चरित' में चौलुक्य शासकों जयसिंह सिद्धराज तथा कुमार पाल का जीवन चरित्र के सम्बन्धित है।

जयानक कृत 'पृथ्वीराज विजय' चौहान राजवंश के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

चन्दबरदायी का 'पृथ्वीराज रासो' भी चौहान वंश से सम्बन्धित है।

इनके अतिरिक्त और भी कई जीवनियाँ हैं जिनसे तत्कालीन इतिहास की जानकारी मिलती है, जैसे—वल्लाल का 'भोज प्रबन्ध', नयन चन्द का 'हम्मीर काव्य', सोमेश्वर कृत 'कीर्ति कौमुदी' आदि।

(1) **बाणभट्ट का हर्ष चरित्र**—भारतीय इतिहास लेखन की परम्परा में 7वीं शताब्दी के आरम्भ में बाणभट्ट कृत हर्ष चरित्र का भी महत्वपूर्ण स्थान है। यह हर्ष चरित्र आख्यायिका के रूप में है, कौटिल्य ने आख्यायिका को इतिहास की संज्ञा दी थी। इसमें हर्ष कालीन इतिहास की जानकारी मिलती है।

(2) **कल्हण कृत राजतरंगिणी**—प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन की परम्परा की अन्तिम एवं सर्वमहत्वपूर्ण कड़ी के रूप में हम कल्हण कृत राजतरंगिणी को रख सकते हैं। कल्हण ने 1148 ई. से 1149 ई. के बीच राजतरंगिणी का सृजन किया। इसमें काव्य एवं इतिहास का सुन्दर समन्वय मिलता है। घोषाल महोदय एवं व्ही. एस. पाठक महोदय ने राजतरंगिणी को एक इतिवृत्त की संज्ञा दी है। चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र में इतिवृत्त को भी इतिहास माना है।